

जयशंकर प्रसाद के साहित्य में इतिहास के प्रति जागरूकता: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

शीजा टी एस^{1*}, डॉ. राजीव कुमार ओझा²

1 शोधार्थी, सनराइज़ यूनिवर्सिटी, अलवर, राजस्थान, भारत

sheejasibin1057@gmail.com

2 प्रोफ़ेसर, हिंदी विभाग, सनराइज़ यूनिवर्सिटी, अलवर, राजस्थान, भारत

सार: जयशंकर प्रसाद एक भारतीय लेखक हैं जिन्होंने भारतीय रूढ़िवादी समाज में कट्टरपंथी नारीवाद को पेश करने के लिए ध्रुवस्वामिनी नाटक लिखा था। उन्होंने इस नाटक के माध्यम से घरेलू उत्पीड़न, बहुविवाह, कामुकता, तलाक के अधिकार, पुनर्विवाह जैसे कट्टरपंथी मुद्दों पर तर्कसंगत चर्चा शुरू की। यह शोधपत्र दोहराता है कि, हालांकि कट्टरपंथी नारीवाद की अवधारणा 1960 के दशक के आसपास पश्चिमी साहित्य में आई, लेकिन कट्टरपंथी विचारों के केंद्र को प्रसाद के बीसवीं सदी की शुरुआत के नाटकों में पहचाना जा सकता है। यह शोधपत्र इस बात पर जोर देता है कि वे बौद्ध धर्म और उस समय के भारतीय नारीवादी कार्यकर्ताओं के विचारों से प्रभावित थे। ध्रुवस्वामिनी नाटक का विश्लेषण करने के लिए साहित्य समीक्षा की गई है। इस शोधपत्र का परिणाम हिंदी नाटक में चर्चित कट्टरपंथी नारीवाद की खोज होगी

मुख्य शब्द: कट्टरपंथी, नारीवाद, हिंदी, नाटक, बहुविवाह, पितृसत्ता, घरेलू उत्पीड़न

परिचय

शेक्सपियर, द्विजेंद्रलाल राय और जयशंकर प्रसाद का तुलनात्मक अध्ययन साहित्य के क्षेत्र में सबसे अनूठा और असामान्य तुलनात्मक अध्ययन माना जा सकता है। द्विजेंद्रलाल राय और जयशंकर प्रसाद दोनों ही भारत के लेखक हैं। उन्होंने अपने-अपने विचारों और साहित्यिक विशेषताओं के साथ भारतीय साहित्य में योगदान दिया है। द्विजेंद्रलाल राय के देशभक्ति के गीत आज भी याद किए जाते हैं। दूसरी ओर, हिंदी साहित्य के दार्शनिक जयशंकर प्रसाद भी हिंदी साहित्य में एक प्रसिद्ध और महान साहित्यिक चरित्र हैं। फिर बात आती है अंग्रेजी साहित्य के दिग्गज विलियम शेक्सपियर की, जिन्होंने अंग्रेजी भाषा को 1700 नए गढ़े हुए शब्दों के साथ योगदान दिया, अंग्रेजी साहित्य को नाटकों, सॉनेट्स और हास्य, त्रासदी और उन विषयों सहित अपनी विशाल श्रृंखला के साथ समृद्ध किया, जिनके बारे में केवल शेक्सपियर ही सोच सकते थे। उन्होंने मैकबेथ जैसे प्रसिद्ध त्रासदी नायक जैसे पात्रों के साथ विश्व साहित्य का परिचय दिया, जो रंगमंच और नाटकों की दुनिया में अग्रणी बन गए। उनका योगदान बेजोड़ है और उनकी विरासत ने अन्य लेखकों को प्रेरित किया है और आज भी कर रही है। किसी भी पैमाने पर, किसी

भी संभावित तुलनात्मक पहलू में शेक्सपियर की तुलना द्विजेन्द्रलाल राय और जयशंकर प्रसाद से नहीं की जा सकती।

उद्देश्य

1. जयशंकर प्रसाद के साहित्य में इतिहास के प्रति जागरूकता लाना
2. जयशंकर प्रसाद की रचनाओं के बारे में जानकारी प्राप्त करना

शोध पद्धति

जयशंकर प्रसाद के नाटक द्रुस्वामिनी में उन्हें किस हद तक लागू किया गया है। इस नाटक के आमूलचूल पहलुओं की पहचान करने के लिए इसका ऊपर बताई गई अवधारणाओं के साथ शाब्दिक विश्लेषण किया गया है। नाटक के माध्यम से घरेलू उत्पीड़न, बहुविवाह, कामुकता, तलाक के अधिकार, पुनर्विवाह जैसे कट्टरपंथी मुद्दों पर तर्कसंगत चर्चा शुरू की। यह शोधपत्र दोहराता है कि, हालांकि कट्टरपंथी नारीवाद की अवधारणा 1960 के दशक के आसपास पश्चिमी साहित्य में आई, लेकिन कट्टरपंथी विचारों के केंद्र को प्रसाद के बीसवीं सदी की शुरुआत के नाटकों में पहचाना और विश्लेषण किया गया है।

परिणाम और विश्लेषण

जयशंकर प्रसाद के साहित्य में इतिहास के प्रति जागरूकता

भारत एक पुरुष प्रधान देश है जिसकी व्यापक रूप से बाल विवाह की विशेषता थी, और प्रसाद युग में विधवा पुनर्विवाह पर प्रतिबंध आम था। हालाँकि भारतीय समाज में नारीवाद की अवधारणा नहीं है, लेकिन कई विद्वानों ने महिलाओं की इस असमानता के खिलाफ आवाज़ उठानी शुरू कर दी है। राजा राममोहन राय, पंडित ईश्वर चंद्र विद्यासागर (1820-1891) भारत में महिला अधिकारों के आंदोलन में अग्रणी हैं। विधवाओं के पुनर्विवाह पर विशेष ध्यान देने वाले 'यंग बंगाली आंदोलन' की स्थापना भारत में 1830 में समाज में आमूलचूल परिवर्तन लाने के लिए की गई थी। ईश्वर चंद्र विद्यासागर (1820-1891) और दयानंद सरस्वती (1824-1883) सामाजिक कार्यकर्ता हैं जिन्होंने विधवा पुनर्विवाह के निषेध और महिलाओं को प्रभावित करने वाली अन्य बुराइयों के खिलाफ काम किया। जयवर्धने (2009) ने उल्लेख किया कि उनकी कड़ी मेहनत के परिणामस्वरूप 1856 के अधिनियम के माध्यम से विधवाओं के पुनर्विवाह को कानूनी रूप से अनुमति दी गई थी। हालाँकि, यह भारतीय समाज में विधवाओं के बारे में रूढ़िवादी मान्यताओं को बदलने के लिए पर्याप्त मजबूत नहीं था। विद्यासागर को एक नारीवादी के रूप में पेश किया जा सकता है जिन्होंने बहुविवाह के खिलाफ अभियान चलाया था जो उच्च जाति के हिंदुओं

और मुसलमानों दोनों द्वारा प्रचलित था। प्रसाद इन विचारों से प्रेरित थे जब उन्होंने ध्रुवस्वामिनी नाटक लिखा था।

भारत में नारीवादी आंदोलन पश्चिमी विचारकों से काफी अलग था, क्योंकि भारत में महिला अधिकारों के लिए आंदोलन के अग्रदूत पुरुष नारीवादी थे। इस प्रवृत्ति के प्रभाव से पंडिता रमाबाई (1858-1922), सरोजनी नायडू (1879-1949) और कमलादेवी चट्टोपाध्याय जैसी महिला नारीवादियों ने भी अपने अधिकारों के लिए लड़ना शुरू कर दिया। यद्यपि कट्टरपंथी नारीवाद की अवधारणा 1960 के दशक के अंत में पश्चिमी साहित्य में आई थी, लेकिन इस तरह के विचार शुरुआती भारतीय आंदोलन में थे। महिलाओं के संबंध में कट्टरपंथी परिवर्तन भगवान बुद्ध द्वारा हजारों साल पहले भारतीय समाज में पेश किए गए थे। भगवान बुद्ध के ज्ञानोदय के पाँच साल बाद उनकी पालक माँ, प्रजापति पाँच सौ महिलाओं के साथ भिक्षुणी बनने की अनुमति लेने बुद्ध के पास आईं। हालाँकि उन्होंने तीन बार अनुमति माँगी, लेकिन भगवान बुद्ध ने इसे स्वीकार नहीं किया। अंत में उन्होंने अपने बाल काट लिए चुल्लवग्गा (जैसा कि [ग्रॉस, 1993] में उद्धृत किया गया है) में उनकी कृति बौद्ध धर्म में पितृसत्ता के बारे में इस प्रकार बताया गया है:

फिर आनंद, पाठ (कुल्लवग्गा, x 1.3) के अनुसार, दूसरे तरीके से बुद्ध के पास पहुंचे और पूछा, "भगवान, क्या महिलाएं, सत्य-खोजी द्वारा घोषित धम्म और अनुशासन में घर से बेघर होकर, धारा-प्राप्ति के फल या एक बार लौटने के फल या गैर-वापसी या पूर्णता के फल को महसूस करने में सक्षम हैं?" यह दोहराता है कि वह भिक्षुणीत्व 1 को स्थापित करने के लिए कितनी समर्पित थीं और वह पहली महिला थीं जिन्होंने समाज में आमूलचूल परिवर्तन के लिए लड़ाई लड़ी। एक तरह से प्रजापति के कार्य में भगवान बुद्ध के समय के दौरान कट्टरपंथी नारीवाद का केंद्रक शामिल है। बुद्ध ने भिक्षुणीत्व की अनुमति दी और साथ ही समाज द्वारा उपेक्षित महिलाओं, जैसे; पटाचारा और राजुमाला, पर अपना दयालु ध्यान देकर भारतीय समाज में आमूलचूल परिवर्तन लाए। इस तर्क से यह स्पष्ट है कि भगवान बुद्ध के काल में समाज में आमूलचूल परिवर्तन की अवधारणा आई। पहले बताए गए सभी सिद्धांत और अवधारणाएं पश्चिमी और भारतीय दोनों ही धारणाओं में आमूलचूल नारीवाद के विकास पर चर्चा करती हैं। वर्तमान शोधपत्र में चर्चा की गई है कि

जयशंकर प्रसाद की रचनाओं का अवलोकन

30 जनवरी, 1889 को जयशंकर प्रसाद का जन्म हुआ और 14 जनवरी, 1937 को उनका निधन हो गया। आधुनिक हिंदी साहित्य और रंगमंच में उनका योगदान सबसे प्रसिद्ध था (जयलक्ष्मी, 2020)। भारत

के उत्तर प्रदेश के वाराणसी में एक साधारण मधेशियाई तेली वैश्य परिवार के बेटे, वे एक शानदार कवि, उपन्यासकार और नाटककार थे। बाबू देवकी प्रसाद, जिन्हें आमतौर पर सुंघनी साहू के नाम से जाना जाता है, लड़के के पिता हैं और खुद तंबाकू से संबंधित व्यापार चलाते हैं। काव्य भाषा और दार्शनिक विषय दोनों पर उनका पूरा ध्यान था। यही कारण है कि उन्हें हिंदी के शीर्ष दार्शनिक, लेखक और साहित्यकार के रूप में माना जाता है। उन्होंने रोमांटिक से लेकर राष्ट्रवादी तक कई तरह की कविताएँ लिखीं। "हिमाद्रि तुंग श्रृंग से", जिसे उन्होंने देश को अंग्रेजों से आज़ादी मिलने से पहले लिखा था, उनकी सबसे प्रसिद्ध देशभक्ति कविता मानी जाती है। उन्होंने ब्रज भाषा (चित्राधार संग्रह) में कविता लिखना शुरू किया, लेकिन जल्द ही खड़ी और संस्कृत भाषाओं में बदल गए। उन्होंने संस्कृत में नाटक लिखना शुरू किया, लेकिन बाद में उन्होंने बंगाली और फ़ारसी में भी नाटक लिखना शुरू कर दिया। चंद्रगुप्त, स्कंदगुप्त और ध्रुवस्वामिनी नाटक उनकी प्रसिद्ध रचनाओं में से कुछ हैं (चंद्रशेखर, 2019)। अपने नाटकों और अन्य प्रकाशनों के माध्यम से, उन्होंने प्राचीन भारत के कई उल्लेखनीय व्यक्तियों और कहानियों की जीवनी को चित्रित किया है। पाया गया कि सबसे ज़मीनी हिंदी नाटक वे थे जो उन्होंने लिखे थे। आधुनिक भारतीय रंगमंच के लिए, प्राचीन भारतीय नाटक के एक प्रोफेसर शांता गांधी ने 1960 के दशक में उनके कुछ टुकड़े चुने। 1928 में, उन्होंने स्कंदगुप्त का लेखन पूरा किया, जो उनके सबसे महत्वपूर्ण कार्यों में से एक था।

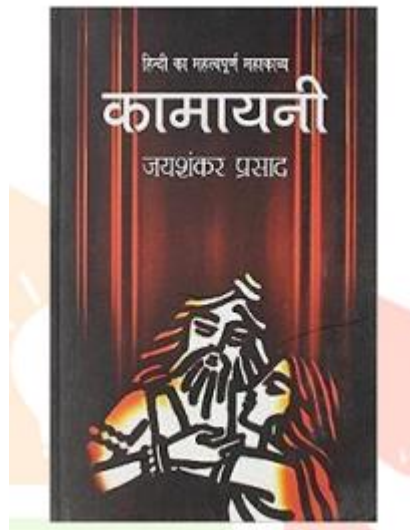
उन्होंने कई रोचक लघु कथाएँ भी लिखी हैं, जिनके विषय ऐतिहासिक से लेकर पौराणिक तक हैं और जो आधुनिक और सामाजिक मुद्दों से जुड़ी हैं। ममता नामक उनकी लघु कथा में माँ की ममता और मुगल बादशाह की कहानी दोनों को दर्शाया गया है। छोटा जादूगर एक अलग तरह की लघु कथा है जो एक ऐसे युवा लड़के के जीवन का वर्णन करती है जिसने छोटे-छोटे खिलौनों के साथ सड़क पर प्रदर्शन करके पैसे कमाने का तरीका खोज लिया। जयशंकर प्रसाद की कुछ प्रसिद्ध कविताएँ हैं:

- "कानन कुसुम (अर्थात् वन पुष्प)"
- "झरना (मतलब झरना)"
- "चित्राधर"
- "लहार"
- "हिमाद्रि तुंग श्रृंग से"
- "महाराणा का महत्व"

- "भारत महिमा"
- "कामायनी (मनु और बाढ़ के बारे में एक महाकाव्य) वर्ष 1935 में"
- "एक घूंट"
- "अंसु"
- "नारी, तुम प्रेम का अवतार हो"
- "आत्मकथा"
- "प्रयांगित"

जयशंकर प्रसाद की सर्वश्रेष्ठ कृतियों में से एक 'कामायनी'

जयशंकर प्रसाद की कविता "कामायनी" उनकी सर्वश्रेष्ठ और सबसे प्रसिद्ध कृतियों में से एक है (जयलक्ष्मी, 2020)। हिंदी कविताओं के उनके सर्वश्रेष्ठ संग्रह का नाम कामायनी है। महाकाव्य कामायनी आज भी कवियों को बहुत पसंद है। उन्होंने ज्ञान, आवश्यकता और क्रिया, तीन ऐसी चीज़ों को मिलाकर यह कविता रची जो मानव अस्तित्व के लिए मौलिक हैं। मनु, इडा और श्रद्धा के पात्रों के माध्यम से, कविता इतिहास, सांस्कृतिक विकास और महान बाढ़ की कथा का पता लगाती है। 1935 में प्रकाशित होने के बाद कामायनी को व्यापक सार्वजनिक प्रशंसा और पाठकों से सकारात्मक समीक्षा मिली।



भविष्य 1: कामायनी

कार्यों के बीच तुलना और अंतर

जब भारतीय साहित्य की इन दो प्रसिद्ध हस्तियों की तुलना की बात आती है, तो उन्हें तुलना के पैमाने पर रखना उचित नहीं है। साहित्य में किसी भी लेखक की तुलना दूसरे से नहीं की जा सकती। हालाँकि बेहतर समझ के लिए द्विजेंद्रलाल राय और जयशंकर प्रसाद का मूल्यांकन उनके कार्यों के आधार पर किया जा सकता है। द्विजेंद्रलाल राय देशभक्त व्यक्ति थे, उनकी रचनाएँ इस बात का स्पष्ट प्रमाण हैं कि वे अपने देश से कितना प्यार करते थे (सुब्रमण्यन, 2020)। उनकी अधिकांश रचनाएँ राष्ट्रवाद के इतिहास पर आधारित हैं। द्विजेंद्रलाल राय उन लोगों में से एक थे जिन्हें बंगाली साहित्य के इतिहास में उनके असाधारण कार्यों और कविताओं, गीतों और उनकी अन्य साहित्यिक भविष्यवाणियों के लिए आज भी याद किया जाता है, उनकी रचनाएँ, "धन धन्य पुष्प भरा" और "बंगा अमर जननी अमर" उनमें से एक हैं जिन्होंने बंगाली साहित्य को समृद्ध किया है। दूसरी ओर, जयशंकर प्रसाद एक शानदार कवि, उपन्यासकार और नाटककार थे। उन्हें भी राय की तरह हिंदी साहित्य में एक प्रसिद्ध दार्शनिक, लेखक और कवि के रूप में जाना जाता है। चंद्रगुप्त, स्कंदगुप्त और ध्रुवस्वामिनी की रचनाएँ उन्होंने ही की हैं (जयलक्ष्मी, 2020)। जयशंकर प्रसाद छायावादी कवि के रूप में जाने जाते थे। जयशंकर प्रसाद को हिंदी में स्वच्छंदतावाद के प्रमुख स्तंभों में से एक माना जाता है। एक सामान्य कारक जिस पर इस तुलनात्मक अध्ययन को आगे बढ़ाया जा सकता है, वह यह है कि उनके कई कार्यों में हिंदू पौराणिक कथाएँ शामिल हैं। दोनों साहित्यकारों ने पौराणिक विशेषताओं पर अपनी-अपनी रचनाएँ लिखीं। द्विजेंद्रलाल राय और जयशंकर प्रसाद एक-दूसरे से कई मायनों में अलग थे। प्रसाद साहित्य के दार्शनिक विचारों की ओर अधिक झुकाव रखते थे, उनकी कविताएँ, उनकी लेखन शैली उनके दार्शनिक गुणों को लागू करने की उनकी क्षमता को दर्शाती है। उन्होंने वेदों से बहुत प्रेरणा ली, जिन्होंने अपनी गहन दार्शनिक प्रतिद्वंद्विता में उनका अनुकरण किया। जयशंकर प्रसाद ने वेदों में बहुत रुचि दिखाई, जिसका उनके द्वारा लिखी गई कविता, नाटक, कहानी और उपन्यासों पर बड़ा प्रभाव पड़ा। काव्य भाषा और दार्शनिक विषय दोनों पर उनका पूरा ध्यान था। यही कारण है कि उन्हें हिंदी के शीर्ष दार्शनिक, लेखक और साहित्यकार के रूप में माना जाता है। लेकिन द्विजेंद्रलाल राय मुख्य रूप से राजनीतिक लेखन और देशभक्ति से जुड़े थे, खासकर उनके बाद के कार्यों में। द्विजेंद्रलाल ने तपखेयाल को भागलपुर और मुंगेर में रहते हुए सीखा और बाद में उन्होंने इसकी ध्वनि को अपनी रचनाओं में शामिल किया। द्विजेंद्रलाल ने कई व्यंग्य गीत भी लिखे, जिनमें से कई उस समय की देशभक्ति की भावना से प्रेरित थे। "हे मेरे बंगाल, मेरी मातृभूमि," "धनधान्य पुष्पभरा," और द्विजेंद्रलाल के अन्य प्रसिद्ध देशभक्ति गीत केवल कुछ उदाहरण हैं ([मेरी भूमि], धन और अनाज से भरपूर)।

इनके साथ ही यदि शेक्सपियर की तुलना की जाए तो यह दुस्साहस होगा। द्विजेंद्रलाल राय, जयशंकर प्रसाद और शेक्सपियर की तुलना करने की कोई गुंजाइश और जगह नहीं है। शेक्सपियर की विशाल और विशाल लेखनी की दुनिया बहुत पुरानी, अनुभवी और लेखन की लगभग हर विधा को समेटे हुए है। जबकि पहले दो नाम केवल एक उपमहाद्वीप पर आधारित हैं, शेक्सपियर की रचनाओं की तुलना में कम गतिशील हैं। द्विजेंद्रलाल राय और जयशंकर प्रसाद की रचनाओं की श्रेणी को कुछ हद तक समान माना जा सकता है। लेकिन जब इसमें विलियम शेक्सपियर की रचनाओं पर आगे विचार किया जाता है, तो पूरा तुलनात्मक पैमाना शून्य हो जाता है। द्विजेंद्रलाल राय और जयशंकर प्रसाद के साथ शेक्सपियर की तुलना किसी भी तरह से नहीं की जा सकती है। तीन लेखक विशिष्ट हैं और उनकी भविष्यवाणियों ने व्यक्तिवाद को दर्शाया है। द्विजेंद्रलाल राय ने अपनी रचनाओं में राजनीतिक, देशभक्ति के तत्वों को दिखाया है, उनकी रचनाओं को भारतीय साहित्य के इतिहास में सबसे देशभक्तिपूर्ण रचनाओं में से एक माना जाता है। दूसरी ओर, जयशंकर प्रसाद को हिंदी साहित्य का दार्शनिक माना जाता है। उनकी रचनाएँ वेदों से काफी प्रेरित हैं। जयशंकर प्रसाद की रचनाएँ भी 'रोमांटिसिज्म' के पहलू से हैं। वे द्विजेंद्रलाल राय की तुलना में अधिक विचारशील और अप्रत्यक्ष लेखक हैं। ये सभी बहुत अलग हैं और किसी तरह शेक्सपियर की रचनाओं के आगे दब जाती हैं। 'मैकबेथ', 'हेमलेट', 'रोमियो और जूलियट', 'सॉनेट्स' और अन्य सभी साहित्यिक चमत्कार शेक्सपियर ने अपनी भविष्यवाणी के माध्यम से लिखे हैं जो उन्हें अपने समय से आगे का व्यक्ति बनाते हैं (पैम्प्लोना, 2022)। उनकी त्रासदियों और हास्य में समकालीन राजनीतिक और सामाजिक पहलुओं की विशेषताएं इस तरह से थीं कि शेक्सपियर ने समाज की उन बुराइयों को चिह्नित करने के लिए व्यंग्य, उपमा, हास्य का पूरी तरह से उपयोग किया। उनकी साहित्यिक रचनाएँ उनके पाठकों के व्यक्तिगत और सामाजिक दोनों पहलुओं के साथ जुड़ने में सक्षम हैं।

विश्व साहित्य में उनका योगदान

इन तीनों साहित्यकारों के योगदान के संदर्भ में शेक्सपियर पर तो बहुत चर्चा हो सकती है, लेकिन द्विजेंद्रलाल राय और जयशंकर प्रसाद की भूमिका उतनी उत्साहजनक नहीं है। हालांकि, इस तुलनात्मक अध्ययन के लिए यह माना जा सकता है कि विश्व साहित्य के इस विशाल महासागर में द्विजेंद्रलाल राय और जयशंकर प्रसाद का भी छोटा-सा योगदान है। उनकी रचनाओं में उनकी अपनी भविष्यवाणियाँ और अपने-अपने हस्ताक्षर हैं। यह माना जा सकता है कि दोनों ही लेखक एक छोटे से उपमहाद्वीप से थे, लेकिन उन्होंने अपनी अभिव्यक्ति और लेखन शैली को अपनाया, जिसने भारतीय साहित्य और इस तरह विश्व साहित्य को समृद्ध किया। द्विजेंद्रलाल राय और जयशंकर प्रसाद की देशभक्तिपूर्ण रचनाएं

हमेशा रहेंगी और वर्तमान समय में उन्हें अन्य लोगों के साथ भारतीय साहित्य का आधार स्तंभ माना जाता है। उनकी कविताओं, नाटकों, कहानियों और कुल मिलाकर उनकी साहित्यिक उपस्थिति ने भारतीय साहित्य को गतिशील विशेषताओं और अंततः विश्व साहित्य से समृद्ध बनाया है। भारतीय साहित्य की बात आते ही उनका नाम याद आता है। दूसरी ओर, विश्व और अंग्रेजी साहित्य के चमत्कार शेक्सपियर। वह व्यक्ति स्वयं साहित्यिक कृतियों का महासागर है। जब विश्व साहित्य पर उनके कार्यों के योगदान को मापने की बात आती है, तो शेक्सपियर ने अपने कार्यों से विश्व साहित्य को कैसे समृद्ध बनाया है, इसके विभिन्न पहलू हैं। विलियम शेक्सपियर ने अंग्रेजी बोलने वाले लोगों की दुनिया को गहराई से बदल दिया था। शेक्सपियर ने विभिन्न शब्दावली के निर्माण के साथ-साथ लेखकों और पाठकों के बीच संबंधों के विकास सहित विषयों के माध्यम से आधुनिक साहित्य पर महत्वपूर्ण प्रभाव डाला। नाटकों को अभी भी मंच पर प्रदर्शित किए जाने के अलावा, उनके कार्यों में प्रतीकवाद, शब्द-खेल और चरित्र आधुनिक लेखकों को अभिव्यक्ति के नए रूपों के साथ प्रयोग करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। शेक्सपियर ने 1700 आम तौर पर इस्तेमाल किए जाने वाले शब्दों और कई नए वाक्यांशों का आविष्कार किया "जन्मस्थान", "ओस की बूंद", "चमक", "प्रहरी", और "कंबल" कुछ शब्द हैं (डाइक्स, 2022)। इसके अलावा, उन्होंने "आइस को तोड़ना", "ठंडा आराम", "अचार में", "जंगली हंस का पीछा करना", और "जो हो गया सो हो गया" जैसे भाव गढ़े जो आज भी उपयोग में हैं। इसके अतिरिक्त, शेक्सपियर को रिक्त छंद (अतुकांत) की रचना करने तथा आयंबिक पेंटामीटर (दस-अक्षरों वाली पंक्ति जिसमें तनाव रहित और तनाव रहित अक्षरों का क्रम बारी-बारी से होता है) को लोकप्रिय बनाने का श्रेय दिया जाता है।

शेक्सपियर का साहित्य, कला और भाषा सहित रचनात्मक विषयों की एक विस्तृत श्रृंखला पर एक लंबे समय से स्थापित और अच्छी तरह से प्रलेखित प्रभाव रहा है (मार्पोडी, 2019)। अंग्रेजी भाषा उद्धरणों और अभिव्यक्तियों से भरी हुई है, जिनकी जड़ें उनके नाटकों में हैं, जो पश्चिमी गोलार्ध में सबसे अधिक पढ़े जाने वाले नाटक हैं। शेक्सपियर की एक विशेषता यह थी। उन्होंने अपने द्वारा लिखे गए नाटकों में स्रोत सामग्री को गलत तरीके से प्रस्तुत किया। हालाँकि, उन्होंने उन्हें अपनी छवि में "फिर से ढाला", यही वजह है कि मैकबेथ, ओथेलो और शाइलॉक प्रसिद्ध व्यक्ति बन गए। "शेक्सपियर के कार्यों का समकालीन उपन्यासकारों, नाटककारों और कथा लेखकों पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा है। हरमन मेलविल, चार्ल्स डिकेंस, थॉमस डिकेंस और विलियम फॉल्कनर ऐसे कुछ लेखक हैं जो शेक्सपियर से अत्यधिक प्रभावित थे" (किज़ी उस्मोनोवा और तुर्सुन्नाज़ारोवा, 2022)। "शेक्सपियर के लेखन ने चार्ल्स डिकेंस द्वारा लगभग 25 शीर्षकों को प्रेरित किया"। शेक्सपियर को भी अक्सर उनके द्वारा उद्धृत किया जाता था (लापोर्ट, 2020) "शेक्सपियर के हेमलेट का हरमन मेलविले की पुस्तक मोबी डिक में चरित्र के निर्माण

पर बड़ा प्रभाव था" (ग्रीवेन, 2022)। शेक्सपियर की कुछ रचनाएँ मेलविले के कई शीर्षकों के लिए प्रेरणा भी हो सकती हैं। वह लेखकों को प्रेरणा, पाठकों को आनंद और प्रदर्शन कलाकारों को सामग्री का एक समृद्ध भंडार प्रदान करता है।

निष्कर्ष

उपर्युक्त खंडों में चर्चित बिंदुओं से कई महत्वपूर्ण निष्कर्ष निकाले जा सकते हैं। सबसे पहले, हिंदी साहित्य के रोमांटिक काल के लेखक होने के नाते प्रसाद ने अपने नाटक ध्रुवस्वामिनी में तलाक की अनुमति देकर भारतीय समाज में क्रांतिकारी नारीवादी विचारों को सफलतापूर्वक पेश किया। हालांकि 1856 के अधिनियम के तहत विधवाओं के पुनर्विवाह को कानूनी रूप से अनुमति दी गई थी, लेकिन भारतीय समाज ने इसे स्वीकार नहीं किया और इसका पालन नहीं किया। चंद्रगुप्त के साथ ध्रुवस्वामिनी के पुनर्विवाह को शुरू करने के माध्यम से प्रसाद ने उपरोक्त अधिनियम को सामाजिक बनाने और समाज में क्रांतिकारी बदलाव लाने की कोशिश की। दूसरे, हालांकि 1960 के दशक के उत्तरार्ध में कट्टरपंथी नारीवाद को एक सिद्धांत के रूप में मान्यता दी गई थी, इस अवधारणा का केंद्र बौद्ध धर्म में शुरू हुआ जहां प्रजापति; सिद्धार्थ की पालक माँ ने भगवान बुद्ध से भिक्षुनी होने का दावा किया। अंत में, उन्होंने इस नाटक के माध्यम से बौद्ध अवधारणाओं का उपयोग करके बहुविवाह और पितृसत्तात्मक प्रभुत्व के तहत महिलाओं की स्थिति की आलोचना की, जिसके कारण महिलाओं पर घरेलू उत्पीड़न हुआ। इसलिए, यह स्पष्ट है कि प्रसाद ने तलाकशुदा और विधवा विवाह को सामाजिक मान्यता देने का एक सराहनीय प्रयास किया था। इन सब बातों के परिणामस्वरूप यह ध्यान देने योग्य है कि ध्रुवस्वामिनी नाटक में कट्टरपंथी नारीवाद के पहलुओं की पहचान की जा सकती है।

सन्दर्भ

1. आचार्य, आर. आर. (2009)। 21वीं सदी के लिए मनु के नियम। मार्च 2018 को <http://www.srimatham.com/uploads/5/5/4/9/.../manu for modern times.pdf> से प्राप्त किया गया
2. ब्रायसन, वी. और कैम्पलिंग, जे. (सं.). (1999). नारीवादी वाद-विवाद: सिद्धांत और राजनीतिक व्यवहार के मुद्दे। हाउंड्स मिल: मैकमिलन।

3. चोबे, ए. (2009)। वॉयस फ्रॉम द योर: थेरीगाथा राइटिंग्स ऑफ द भिक्कनिस। द इंडियन रिव्यू ऑफ वर्ल्ड लिटरेचर इन इंग्लिश। मार्च 2018 को <http://worldlitolonline.net/voices-from-the-yore.pdf> से प्राप्त किया गया
4. महापरिनिब्बा सुत्त (n.d.)। द्विघ निकाय 16. मार्च 2018 को <https://suttacentral.net/dn16/pli/ms> से प्राप्त किया गया।
5. ग्रॉस, रीता. एम. (1993). पितृसत्ता के बाद बौद्ध धर्म: बौद्ध धर्म का एक नारीवादी इतिहास, विश्लेषण और पुनर्निर्माण। यूएसए: स्टेट यूनिवर्सिटी ऑफ़ न्यूयॉर्क प्रेस।
6. जयवर्धने, के. (2009). तीसरी दुनिया में नारीवाद और राष्ट्रवाद (तीसरा संस्करण)। कोलंबो: सोशल साइंटिस्ट्स एसोसिएशन।
7. नारायण, बी. और नागेंद्र. (सं.). (1981). हिंदी नाटक और मंच। नई दिल्ली: बंसल एंड कंपनी।
8. नागेंद्र और हरदयाल, (सं.). (2009). हिंदी साहित्य का इतिहास (35वां संस्करण)। नोएडा: मयूर पेपरबेक्स।
9. पोटा, एन. (1987). हिंदी साहित्य का विषय-वस्तु विश्लेषण: मैनुअल और अनुप्रयोग की तैयारी। बॉम्बे: हिमालय पब्लिशिंग हाउस।
10. प्रसाद, जे. (एन.डी.). ध्रुवस्वामिनी. नई दिल्ली: कमल प्रकाशन.
11. रस्तोगी, जी. (2008). हिंदी नाटक का आत्म संघर्ष. इलाहबाद-1: लोकभारती प्रकाशन.
12. शर्मा, जे.पी. (2017)। प्रसाद के नाटकों का शास्त्री अध्ययन (दूसरा संस्करण)। नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन.
13. सिंह, सी.एन. (2007)। केवल अब तक और आगे कोई कट्टरपंथी नारीवाद और महिला लेखन नहीं, अटलांटिक प्रकाशक और वितरक
14. सुट्टा सेंट्रल: प्रारंभिक बौद्ध ग्रंथ, अनुवाद और समानताएं। (रा।)। मार्च 2018 को <https://suttacentral.net/dn16/pli/ms> से लिया गया।
15. वाजपेई, एन.डी. (2013)। जयशंकर प्रसाद (प्रथम संस्करण)। इलाहबाद-1: लोकभारती प्रकाशन.

